साहित्य संहिता
Available at http://sahityasamhita.org/
ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 0
June 2016

सूक्ष्म कोमल कामनाएँ

शालिनी साहू
ऊँचाहार,रायबरेली(उ०प्र०)

दर्ज होती नजर आती
स्थूल भावनाएँ
हृदय भंगिमा कराहती
सूक्ष्म कोमल कामनाएँ
बढ़ता ताप निज शरीर का
वैसे दिग्भ्रमित होती
पथ कामनाएँ!
ना सूझता फिर कोई
रंग,ना कोई उत्सव
बस हृदय में सिमट
जाती कोमल
कामनाएँ!
विचलित हुआ जो
पथ क्रम से
टूटता फिर नजर आता
निरन्तर जीवन क्रम में
अगणित तारों की
भाँति छिटकता
नजर आता चारों
दिशाओं की ओर
हौसला जो पुन: मिलता
एकाकार हो जाता
समाहित हो जाता
तब चन्दा के

साहित्य संहिता

Available at http://sahityasamhita.org/

ISSN- 2454-2695
Volume 02 Issue 0
June 2016

नवरूप सौन्दर्य में
बिखेरता निज प्रकाश
सम्पूर्ण धरा के
यौवन में!

.....